अंधेरी दुनिया में एक उज्ज्वल प्रयास

भारत डोगरा

अंधेपन की संभावना को कम करने के साथ उन व्यक्तियों की सहायता का भरपूर प्रयास ज़रूरी है जिनकी आंखों की ज्योति पहले ही जा चुकी है। ऐसे समग्र सोच के साथ कानपुर ज़िले के रसूलाबाद ब्लॉक में एक बहुत सार्थक प्रयास हुआ है। इसकी सार्थकता का एक आयाम यह है कि परियोजना की अवधि पूरी होने के बाद भी सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपने प्रयास को जारी रखा है।

श्रमिक भारती संस्था की ओर से इस प्रोजेक्ट के समन्वयक नवीन सिंह बताते हैं, "हमने पूरे ब्लॉक का सर्वेक्षण कर सभी दृष्टिहीन व्यक्तियों का पता लगाने का प्रयास किया। ऐसे 230 व्यक्तियों की सूची बनाकर उनके अनुकूल रोज़गार की तलाश कर हम उन्हें समुचित रोज़गार से जोड़ने लगे।"

यहां के अनेक गांवों में बिजली की व्यवस्था ठीक न होने के कारण फोन चार्ज करने में लोगों को काफी कठिनाई होती थी। यहां मोबाइल फोन चार्ज करने के लिए 23 सौर इकाई लगाने का कार्य संस्था ने किया। प्रत्येक इकाई के संचालन की ज़िम्मेदारी एक दृष्टिहीन व्यक्ति को दी गई। पुरुषों और महिलाओं दोनों का चुनाव किया गया।

मोबाइल फोन चार्ज करने में इन व्यक्तियों को रोज़गार का एक सम्मानजनक साधन मिला। जहां पहले ये लोग बहुत उपेक्षित जीवन जी रहे थे, वहीं अब गांव के अधिकांश लोग बार-बार अपना फोन चार्ज करवाने आने लगे।

इसके बाद धीरे-धीरे नए अवसर तलाशते हुए श्रमिक भारती ने दृष्टिहीन लोगों के लिए कई ऐसे रोज़गार आरंभ करने का प्रयास किया जो इस क्षेत्र में जम सके। इस तरह कुछ पुरुषों व महिलाओं को दोना-पत्तल बनाने का कार्य मिला, तो कुछ को चारपाई व बान बुनने का। दोने-पत्तल की चाट-खोमचे वालों में अच्छी मांग है। वे घर में आकर ही दोने-पत्तल खरीद ले जाते हैं।

इन विभिन्न रोज़गारों से आय प्राप्त होने के साथ-साथ दृष्टिहीन व्यक्तियों का आत्मसम्मान भी स्थापित हुआ है।

अनेक दृष्टिहीन बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान आ गया था। उन्हें निकट के स्कूल से जोड़कर पढ़ाई फिर से आरंभ करवाने का सफल प्रयास किया गया। उन्हें ज़रूरी शिक्षा सामग्री भी दी गई। इनमें से एक छात्र पंकज तो इतना होनहार निकला कि उसने शिक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अब पंकज के लिए आगे बेहतर शिक्षा के अवसर तलाशने के प्रयास भी चल रहे हैं।

भविष्य में दृष्टिहीनता की संभावना को न्यूनतम करने के मकसद से ब्लॉक स्तर पर मोतियाबिंद के मामले पता लगाए गए। छोटे-छोटे समूह बनाकर इन व्यक्तियों के ऑपरेशन करवाए गए। आंखों में लगने वाली चोट के इलाज के लिए रसूलाबाद में ही व्यवस्था की गई। ज़रूरत पड़ने पर वीडियो कांफ्रेंसिंग द्वारा उच्च दक्षता के चिकित्सकों का परामर्श भी इस चिकित्सा केंद्र में लिया जाता है।

एक ब्लॉक के स्तर पर दृष्टिहीनता की संभावना को कम करने व दृष्टिहीन लोगों को बेहतर अवसर उपलब्ध करवाने का यह प्रयास साईटसेवक अभियान के अंतर्गत किया गया है। परियोजना का समय समाप्त होने के बाद भी कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवा व निष्ठा के बल पर इसे जारी रखा है। ***(स्रोत फीचर्स)***